बच्चे– बापदादा नमस्ते। बापदादा– सिकीलधे लाडले बच्चे नमस्ते। रिकॉर्ड :– तुम्हीं हो माता–पिता..... ओम् शांति। बच्चे ये किसकी महिमा करते हैं? पारलौकिक माता–पिता की। इस समय तो कलियुग है, दुनिया पतित है। सभी नर्कवासी हैं। इसको नर्क वा विषय सागर भी कहा जाता है। इस नर्क से स्वर्ग ले जाने वाले को ही खेवैया कहा जाता है। स्वर्गवासियों के भी चित्र हैं, नर्क वासियों के भी चित्र हैं। स्वर्ग वासी तो पास्ट हो गए। नर्कवासी प्रेजेंट में हैं। नर्कवासी, स्वर्गवासियों के मंदिर में जाते हैं। ल०ना० स्वर्गवासी थे। भारतवासी ये भी भूल गए हैं; क्योंकि पतित नर्कवासी हैं। विष्टा के कीड़े हैं। भ्रमरी का मिसाल भी मनुष्यों के लिए है। अब यह कलियुगी दुनिया वैश्यालय नर्क है। मनुष्य बहुत दुखी हैं। सभी नर्कवासी हैं। सन्यासी तो कहते हैं, स्त्री नर्क का द्वार है; क्योंकि मनुष्य इस विषय सागर में कूद गंदे बनते हैं; इसलिए कहते हैं– स्त्री नर्क का द्वार है। देखो, जो ईश्वरी(य) संतान हैं, उन्हों को भगवान बैठ समझाते हैं। बच्चे कहते हैं– शिवबाबा, हम आपके हैं। आप हमें स्वर्ग ले चलो, ये नर्क द्वार है। दुर्योधन सिर्फ एक नहीं था। इस समय देख रहो(रहे) हो, सभी दुर्योधन हैं। सब स्त्रियों को नगन करते हैं। अब ल०ना० के मंदिर में तो बहुत जाते हैं। समझते हैं, ये स्वर्ग में रहने वाले हैं। उनकी महिमा गाते हैं– सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण....; क्योंकि ल०ना० नर्क के द्वार नहीं हैं। यहाँ तो नर्क में जाकर मूत पीते हैं। ल०ना० भी तो भारत में ही होकर गए हैं ना। उसको कहा जाता है स्वर्ग, वैकुंठ, देवी–देवताओं की दुनिया। अब है असुरों की दुनिया। सभी दुर्योधन हैं। स्त्री को नगन कर गोता खाते हैं। ल०ना० के मंदिर में जाते हैं तो लक्ष्मी को कभी कहेंगे, नर्क का द्वार है? कभी नहीं। वो भी तो 5000 वर्ष पहले इसी भारत में राज्य करते थे। सीता–राम के लिए भी कभी नहीं कहेंगे कि नर्क के द्वार थे। अगर स्त्री नगन होती है तो पुरुष भी तो नगन होते हैं। अब दोनों कहते हैं, हमको नगन होने से बचाओ, स्वर्ग में ले चलो। भारत में जब स्वर्ग था तो दोनों नर–नारी कभी नर्क के द्वार नहीं बनते थे। वो तो स्वर्ग के द्वार थे। अब दोनों नर्क के द्वार हैं, तब तो उन स्वर्ग के द्वार को पूजते हैं। अब तुम स्वर्ग के द्वार चलने लिए आकर शूद्र से ब्राह्मण बने हो। अब तुम ठहरे ब्रह्मा मुखवंशावली। तुमको सिखाया जाता है– नर्क में गोते मत लगाओ, स्त्री को नगन मत करो। द्रौपदी को नगन होने से बचाया था ना। अब सभी द्रौपदियाँ पुकारती हैं, हमको ल०ना० जैसा बनाओ; इसलिए बाप राजयोग सिखाए रहे हैं, जिससे तुम नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनती हो। बाप कहते हैं, 5 विकारों को जीतो। इस अन्तिम जन्म में नगन न हो। अब तुम ईश्वरी(य) संतान बनी हो। मैं तुमको असुर से देवता बनाता हूँ तो मेरी मत पर चलो। ईश्वर की संतान ब्रह्मा मुखवंशावली बन, फिर अगर नर्क में गिरे, तो स्वर्ग के मालिक नहीं बनेंगे। सबसे बड़ा दुश्मन यही काम है। द्रौप(दी) भी कहती थी, नगन होने से बचाओ, हमको लक्ष्मी जैसा बनाओ। यहाँ तुम आए हो नर से ना० बनने, तो पवित्र बनना पड़े। स्त्री को नगन कर नर्क के द्वार में जाना बंद करना पड़े। ये तो नर्क है ना। गर्भ को नर्क कहते हैं; इसलिए गर्भजेल में सज़ाएँ भोगते हैं। वहाँ भी उनको नर्क भासता है। बहुत त्राह–2 करते हैं, कहते हैं– हमको निकालो, हम पापात्मा नहीं बनेंगे। सतयुग में तो गर्भ नर्क समान नहीं है। उनके लिए तो वहाँ भी स्वर्ग समान है; इसलिए उसको गर्भ महल कहते हैं। यहाँ गर्भ नर्क है, आत्मा त्राह–2 करती है। अब सतयुग में ल०ना०, सीता–राम को भी संतान होंगे; परन्तु वहाँ दिखाते हैं, कृष्ण पीपल के पत्ते पर खीर सागर में आया। तो सतयुग में माता का गर्भ भी जैसे खीर सागर है। तो बाप बच्चों को ऐसे स्वर्ग में ले जाने शिक्षा देते हैं। बाकी गंगा स्नान से कोई पावन नहीं होगा। यह तो दुनिया ही पतित है। तत्व भी पतित हैं। आत्मा में ही खाद पड़ी हुई है। इसलिए गवर्मेन्ट भी कहती 18 कैरेट सोना पहनो। फिर कहेगी, 9 कैरेट वाला पहनो। इसको कहा जाता है पतित गवर्मेन्ट। इसलिए ल०ना० के चित्र बन रहे हैं कि समझाने में क्लीयर हो कि

वो स्त्री नर्क का द्वार है और ये स्त्री(ल०) स्वर्ग का द्वार है। सो कब नगन नहीं होती। नगन होने से बचाने लिए भगवान को आना पड़ता है। भगवान आते ही हैं भक्तों को सुख देने लिए। जो बहुत समय स्वर्ग में रहे हैं वो ही बहुत समय नर्क में रहे हैं। पहले ज़रूर स्वर्ग में रहने वाले ही आएँगे। इसलिए उनको सिकीलधे कहा जाता है। क्यों? तुम हमको 84 जन्मों बाद मिले हो। तब अंत में बाप आकर स्वर्ग ले चलते हैं। बच्चे पूछते हैं– बाबा, स्वर्ग में कितने जन्म रहे? बाप कहते हैं– 21 जन्म। बाबा नर्क में कितने जन्म रहे? कहते– 63 जन्म। बाबा अब क्या करना है? कहते– बच्चे, अब फिर स्वर्ग चलना है। वहाँ तुमको ये ज्ञान नहीं रहेगा। सन्यासी तो किसी को स्वर्गवासी बनाए नहीं सकते। यहाँ तो पवित्र प्रवृत्ति की बात है। दोनों नर्क के द्वार बने हैं। अब भगवानुवाच– बच्चे, नर्क में गोता न खाना। मेरी मत पर चलेंगे तो स्वर्ग के मालिक बनेंगे। अब हम स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। हमारे होते ही नर्क का विनाश होना है। फिर यह कलियुग नाम ही न होगा, नर्क का द्वार कहने वाला ही नहीं रहेगा। अब सन्यासी नर्क का द्वार समझ भागते हैं; परन्तु बैठे तो नर्क में ही हैं। बाप कहते हैं, मैं तो इस पुरानी दुनिया का ही विनाश कर देता हूँ। अब मेरे खातिर इस अन्तिम जन्म में गोता न खाना। बच्चे भी प्रतिज्ञा करते हैं कि हम आपके मत अनुसार पवित्र रह आपसे स्वर्ग का वर्सा लेंगे। अगर प्रतिज्ञा कर ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ बन फिर कोई विकार में जाए कुल–कलंककित बना तो चण्डाल का जन्म मिलेगा। फिर ब्राह्मण और ऊपर से देवताएँ लानत डालते हैं। बाबा वॉर्निंग दे देते हैं। ये काम विकार महा बैरी है। ये भी माया से बॉक्सिंग है। माया अनकॉनशस कर देती है, फिर एक/दो को सावधान करना है; जैसे लक्ष्मण का मिसाल है कि हनुमान ने बूटी सुँघाई। तो अगर स्त्री की विख पीने दिल होती, तो पति अच्छा मजबूत है तो वो सावधान कर देता है। ज्ञान की बूटी सुंघाता है तो खड़ी हो जाती है। ऐसे अच्छी अवस्था वाले एक/दो को सावधान करते रहेंगे। बाप कहते हैं– धरत परिए, धर्म न छोड़िए। भल पति मार डाले तो भी पवित्र रहना; परन्तु कोई मोह वश गिर पड़ती है तो चोट बड़ी जोर से लगती है। समझो, गर्भ से हो गई, तो कोई को मुँह भी दिखाए न सके। तो नुकसान हुआ ना! मंज़िल बड़ी है। स्त्री–पुरुष का झगड़ा हो पड़ता है। वो कहे, विष्टा का कीड़ा बनूँगा, वो कहे– मैं लक्ष्मी बनूँगी। कई पूतनाएँ, सुपनखाएँ भी होती हैं, जो पुरुषों को तंग करती हैं। वो ब्राह्मण, वो शूद्र, तो लड़ाई चलती है। मगर स्त्री अगर नष्टोमोहा हो तो बाप शरण दे सकता है। तुमने ईश्वर की शरण ली है तो माया से तेरी रक्षा करते हैं। अब ये ... रावण का राज्य बाकी थोड़ा समय है। अभी मनुष्य से देवता बनने का युग है। तुम मंदिरों में भी ये चित्र ले जाए सर्विस कर सकती हो। देखो, ये स्वर्ग के मालिक हैं, तुम नर्कवासी हो। अब पवित्र बनो तो हम तुमको ल०ना० के राजधानी में ले चलेंगे। अब इस पतित दुनिया का विनाश हुआ कि हुआ। ल०ना० के चित्र पर बहुत अच्छा समझाए सकते हो। वहाँ ये स्वर्गवासी कभी नगन नहीं होते। अब तो सभी नर्कवासी हैं, दुर्योधन हैं। बड़े–2 मिनिस्टर, लीडर, सभी स्त्री को नगन कर, नर्क में घुसने वाले हैं। ऐसे–2 समझाए सकते हो। इसलिए बाबा कहते हैं– चित्र जल्द बनने चाहिए। शुभ कार्य में देरी नहीं करनी चाहिए। बिरला का भी बड़ा मंदिर है। उनको भी समझाना चाहिए, तुम ऐसे ल०ना० बनने चाहते हो तो पवित्र बनो। गीता में भी लगा है, आसुरी सम्प्रदाय का विनाश, दैवी सम्प्रदाय की स्थापना हुई; परन्तु समझाने की भी ताकत चाहिए। विनाश देख रहे हो, सभी खलास होना है। गाया भी हुआ है– राम गयो, रावण गयो। जाना सभी को है। बाकी थोड़े जाकर रहेंगे। तो क्यों न बाप की मत पर चलना चाहिए। जैसे ल०ना० स्वर्गवासी थे ऐसे बने। चित्र होगा तो झट समझ जाएँगे; इसलिए शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा कहते हैं चित्र जल्दी बनाओ। तो इनसे भारत का उद्धार करना है। सन्यासी तो ऐसा ल०ना० जैसा बनाए न सके। उन्हों का है रजोगुणी सन्यास। अपना सतोप्रधान सन्यास। स्त्री–पुरुष (इ)कट्ठे रह दोनों स्वर्ग के मालिक बने। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ